पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.)/084/2012-14 प्रकाशित: 01.11.2014 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

# युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

## दिल्ली चलो आर्यो

योग निष्ठ संन्यासी
स्वामी दिव्यानन्द जी का
**अमृत महोत्सव**
रविवार, 16 नवम्बर 2014
प्रातः 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक
योग निकेतन,वैस्ट पंजाबी बाग,दिल्ली
–डा.अनिल आर्य,संयोजक

वर्ष-31 अंक-11 कार्तिक-2071 दयानन्दाब्द 190 1 नवम्बर से 15 नवम्बर 2014 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 1.11.2014, E-mail : aryayouthn@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

## केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के 131 वें बलिदान दिवस पर जनकपुरी के दिल्ली हाट में भव्य संगीत संध्या सम्पन्न

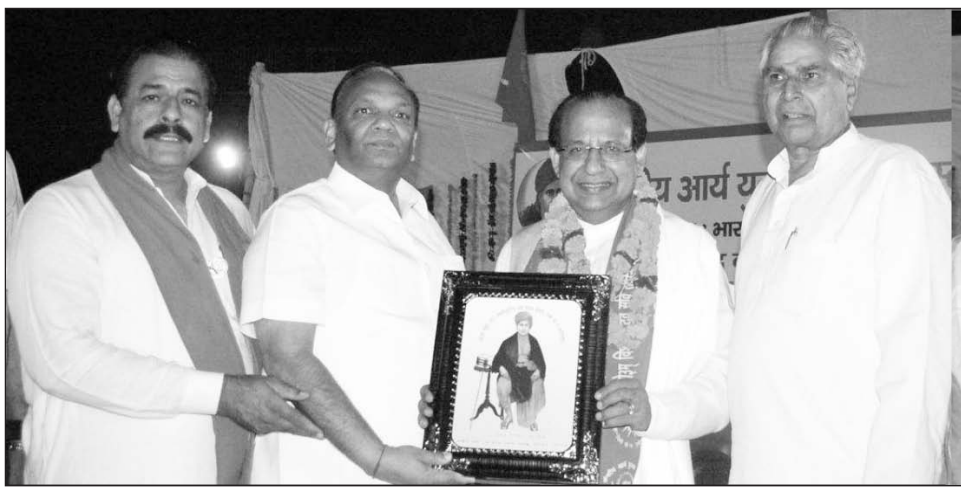

शुक्रवार, 24 अक्तुबर 2014, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में दिल्ली हाट जनकपुरी, दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में समारोह के मुख्य अतिथि डा. जगदीश मुखी (पूर्व वित मन्त्री, दिल्ली सरकार) को सम्मानित करते राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य, श्री प्रदीप तायल (पाईटैक्स ज्वैलर्स) व श्री मायाप्रकाश त्यागी। द्वितीय चित्र में समारोह अध्यक्ष श्री प्रदीप तायल (अध्यक्ष,भारत विकास परिषद् पीतमपुरा शाखा) को सम्मानित करते डा. जगदीश मुखी व श्री रामकुमार सिंह। इस अवसर पर श्री नरेन्द्र आर्य 'सुमन', श्रीमती सुदेश आर्या व श्री अंकित उपाध्याय के मधुर भजनों ने समां बांध दिया। आचार्य गवेन्द्र शास्त्री ने यज्ञ से शुभारम्भ किया।

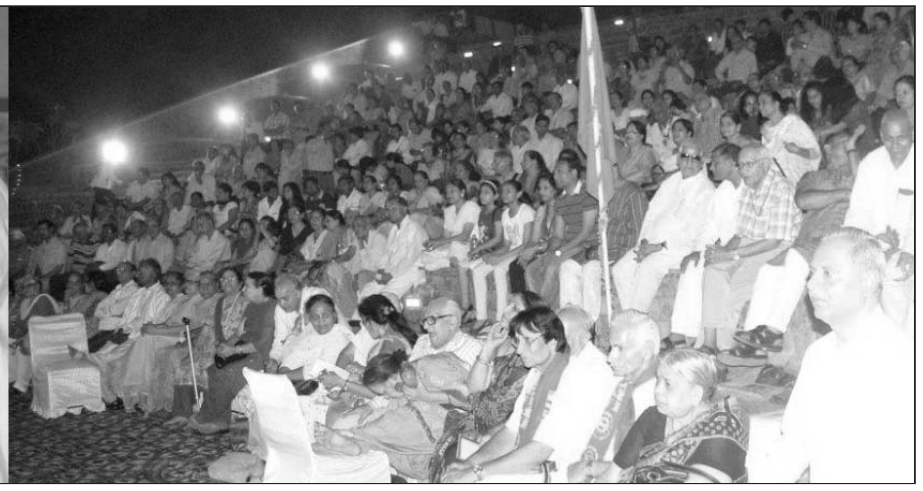

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री मायाप्रकाश त्यागी को सम्मानित करते डा.जगदीश मुखी व श्री रामकुमार सिंह व सामने आर्य जनों की शानदार भागीदारी का सुन्दर द्रश्य।

कर्मठ आर्य नेता श्री रामकृष्ण सतीजा,डा.सुन्दरलाल कथुरिया व पूर्व पार्षद श्रीमती मीना ठाकुर को सम्मानित करते डा. जगदीश मुखी, साथ में श्री अजय तनेजा, श्री रामकुमार सिंह व श्रीमती प्रवीन आर्या। समारोह के पश्चात एक हजार व्यक्तियों के लिये ऋषि लंगर का खुला प्रबन्ध किया गया। श्री महेन्द्र भाई ने व्यवस्था सम्भाली व डा.अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया। इस अवसर पर 15 कर्मठ महिलाओं को आर्य महिला रत्न आवार्ड से सम्मानित किया गया।

# एक विस्मृत हिन्दू सम्राट - महाराजा हेमचन्द्र विक्रमादित्य – विनोद बंसल

सम्राट हेमचन्द्र विक्रमादित्य, भारतीय इतिहास के उन चुनिन्दा लोगों में से हैं जिन्होंने इतिहास की धारा मोड़कर रख दी। वे पृथ्वीराज चौहान (1179–1192) के बाद इस्लामी शासनकाल के मध्य दिल्ली के सम्भवतः एकमात्र हिन्दू सम्राट हुए जो विद्युत की भांति चमके और दैदीप्यमान हुए। उन्होंने अलवर (राजस्थान) के बिल्कुल साधारण से घर में जन्म लेकर एक व्यापारी, माप–तौल अधिकारी, 'दरोगा–ए–डाल चौकी', 'वजीर' (प्रधानमंत्री) और सेनापति होते हुए दिल्ली के तख्त पर राज किया और अपने अपार पराक्रम एवं 22 युद्धों में विजयी रहकर 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की। यह वह समय था जब मुगल एवं अफगान– दोनों ही दिल्ली पर राज्य के लिए संघर्षरत थे। यद्यपि हेमचन्द्र अधिक समय तक शासन न कर सके, तथापि इसे भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना अवश्य कहा जायेगा। हेमचन्द की तूफानी विजयों के कारण कई इतिहासकारों ने उनको 'मध्यकालीन भारत का नेपोलियन' कहा है।

**जन्म तथा प्रारम्भिक जीवन** – हेमचन्द्र, राय जयपाल के पौत्र और राय पूरणदास (लाला पूरणमल) के पुत्र थे। इनका जन्म 02 अक्टूबर, 1501 ई. को अलवर (राजस्थान) जिले के मछेरी नामक गांव में हुआ था। इनके पिता पहले पौरोहित्य कार्य करते थे, किन्तु बाद में मुगलों द्वारा पुरोहितों को परेशान करने के कारण कुतुबपुर, रेवाड़ी में आकर नमक का व्यवसाय करने लगे।

हेमचन्द्र की शिक्षा रेवाड़ी में आरम्भ हुई। उन्होंने संस्कृत, हिन्दी, फारसी, अरबी तथा गणित के अतिरिक्त घुड़सवारी में भी महारत हासिल की। साथ ही पिता के नये व्यवसाय में अपना योगदान देना शुरू कर दिया। अल्पायु से ही हेमचन्द्र, शेरशाह सूरी (1540–1545) के लश्कर को अनाज एवं बन्दूक चलाने में प्रयोग होने वाले प्रमुख तत्व पोटेशियम नाइट्रेट अर्थात शोरा उपलब्ध कराने के व्यवसाय में पिताजी के साथ हो लिए थे। इसी बारूद के प्रयोग के बल पर शेरशाह सूरी ने हुमायूं (1531–1540) एवं (1555–1556) को 17 मई, 1540 ई. को कन्नौज (बिलग्राम) के युद्ध में हराकर काबुल लौट जाने पर विवश कर दिया था। हेमचन्द्र ने उसी समय रेवाड़ी में धातु से विभिन्न तरह के हथियार बनाने के काम की नींव रखी, जो आज भी वहां पीतल, तांबा, इस्पात के बर्तन आदि बनाने के काम के रूप में जारी है।

दिनांक 22 मई, 1545 ई. को शेरशाह सूरी की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र जलाल खां ने इस्लामशाह सूरी के नाम से गद्दी सम्भाली और 1545 से 1554 तक दिल्ली पर शासन किया। पंजाब से बंगाल तक फैले हुए राज्य में अनेक अफगान– सरदारों ने मौके का लाभ उठाकर बगावत करनी चाही, लेकिन इस्लामशाह ने सबको पराजित कर दिया। इस्लामशाह ने एक प्रतिष्ठित व्यापारी की सिफारिश पर हेमचन्द्र को दिल्ली का बाजार– अधीक्षक बनाया और बाद में उन्हें खाद्य एवं आपूर्ति विभाग का अधीक्षक तथा 'दरोगा–ए–डाक चौकी' के महत्वपूर्ण पद पर आसीन कर दिया। सैन्य गतिविधियों, प्रशासन और जनसामान्य के बीच एक अविच्छिन्न सम्पर्क–सेतु बनाकर वह आम नागरिक से लेकर सुल्तान तक ही प्रशंसा के पात्र बन गये। अनेक अफगान–सरदारों की अनिच्छा के बावजूद इस्लामशाह ने हेमचन्द्र को छः हजार सवारों की मुख्तियारी दी और 'अमीर' का खिताब दिया।

दिनांक 22 नवम्बर, 1554 को ग्वालियर में अपनी मृत्य के पूर्व इस्लामशाह ने पंजाब से हेमचन्द्र को बुलाकर उनको दिल्ली की सैनिक और प्रशासनिक व्यवस्था सौंप दीं इस्लामशाह की मृत्यु के बाद उसका बारह वर्षीय पुत्र फिरोजशाह सूरी गद्दी पर बैठा, किन्तु वह कुछ ही महीने शासन कर सका। 1554 में ही उसे शेरशाह के भतीजे मुहम्मद मुबारिज खान ने मौत के घाट उतार दिया और स्वयं आदिलशाह सूरी के नाम से 1554 से 1555 तक शासन किया। आदिलशाह एक घोर विलासी और लम्पट शासक था और शासन की बिल्कुल भी परवाह नहीं करता था। फलस्वरूप अनेक अफगान–अधिकारियों ने उसके विरूद्ध बगावत शुरू कर दी। विद्रोह को दबाने और राजस्व वसूली के लिए आदिलशाह ने हेमचन्द्र को ग्वालियर के किले मे न केवल अपना 'वजीर' (प्रधानमंत्री) बनाया, वरन अफगान सेना का सेनापति भी नियुक्त कर दिया। इस प्रकार हेमचन्द्र पर शासन का भार डालकर आदिलशाह ने चुनार (मिर्जापुर के पास) की राह पकड़ी। इस प्रकार सम्पूर्ण अफगान शासन हेमचन्द्र के हाथ में आ गया। अवसर पाकर हेमचन्द्र ने हिन्दू राज्य का स्वप्न देखा।

हुमायूं, जो पहले 1540 ई. में शेरशाह सूरी द्वारा हराकर काबुल खदेड़ दिया गया था, ने दुबारा हमला करके शेरशाह सूरी के भाई सिकन्दर सूरी को पंजाब से हराकर जुलाई, 1555 ई. में दिल्ली पर अधिकार कर लिया। उस समय अफगान– सरदार आपस में ही संघर्षरत थे। उत्तर भारत, मध्य भारत, बिहार और बंगाल तक उन्होंने अपने झण्डे बुलंद कर दिए। आदिलशाह के सबसे बड़े शत्रु इब्राहीम खान ने कालपी में सिर उठा लिया था। तब आदिलशाह ने हेमचंद्र को बड़ी सेना और पाँच सौ हाथी तथा तोपखाना देकर आगरा और दिल्ली के लिये भेजा। जब हेमचंद्र काल्पी पहुँचे, तब उन्होंने निश्चय कर लिया कि पहले इब्राहीम को समाप्त किया जाए। इसलिए उन्होंने शीघ्रता से उसकी ओर कूच किया। एक बहुत बड़ी लड़ाई हुई, जिसमें हेमचंद्र विजयी हुए और इब्राहीम भागकर बयाना चला गया। हेमचंद्र ने उनका पीछा किया और बयाना को घेर लिया। यह घेरा तीन महीने तक चलता गया। तभी हेमचंद्र को आदिलशाह का आदेश प्राप्त हुआ कि बंगाल के सूबेदार मुहम्मद खान गोरिया (1545–1555) ने विद्रोह कर दिया है। तब हेमचंद्र ने बंगाल की ओर कूच किया और आगरा से 15 कोस की दूरी पर छप्परघाट नामक गांव के निकट मुहम्मद खान गोरिया से लड़ा जिसमें मुहम्मद मारा गया। इसके बाद हेमचंद्र ने बंगाल में अपने सूबेदार शाहबाज खान को नियुक्त किया। इसके 6 माह बाद दिल्ली में हुमायूं की मौत (27 जनवरी 1556) का समाचार सुनकर समझ लिया कि अब हिंदू राज्य के स्वप्न को साकार किया जा सकता है। हेमचंद्र ने मुगल साम्राज्य को उखाड़ फेंकने के लिये दिल्ली की ओर कूंच किया और ग्वालियर से निकलकर बंगाल, बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश व आगरा की कई रियासतों को जीतते हुए, 22 युद्ध लड़ें।

**दिल्ली पर विजय व राज्यारोहणः** 6 अक्टूबर 1556 को हेमचंद्र ने अपने सभी सेना अधिकारियों, अनेक पठान योद्धाओं, 40 हजार घुडसवारों, 51 बड़ी तोपों और 500 छोटी तोपों के साथ दिल्ली के कुतुब मीनार से सेंकेंड मील दूर तुगलकाबाद में अपना डेरा जमाया। दिल्ली के सूबेदार तारदीबेग खान ने उनका मुकाबला करने का असफल प्रयास किया किंतु उसे अपने लगभग 3 हजार मुगल सैनिकों, अपार धन संपत्ति, 1 हजार अरबी घोड़े तथा लगभग 15 सौ हाथियों से हाथ धोना पड़ा और स्वयं जान बचाकर भागना पड़ा। अगले ही दिन दिनांकित अक्टूबर 1556 को दिल्ली के पुराने किले में अफगान और हिंदू सेना नायकों के सानिद्धय में पूर्ण हिंदू धार्मिक विधि से उनका राज्याभिषेक हुआ और उन्हें विक्रमादित्य की उपाधि से विभूषित किया गया। 364 वर्षों के मुगल शासन में पहली बार किसी हिंदू शासक ने गद्दी संभाली थी।

हुमायूं की मृत्यु के पश्चात् उसके 14 वर्षीय पुत्र अकबर (1556–1605) को उसके कई सेनापतियों व संरक्षक बैरम खान ने हेमचंद्र से युद्ध करने के लिए अकबर को प्रेरित किया। 5 नवंबर 1556 को पानीपत में हुए इस युद्ध में अकबर और बैरम खान ने स्वयं युद्ध में भाग नहीं लिया और युद्ध क्षेत्र से सेंचुरी किलोमीटर दूर सौंधापुर गांव स्थित शिविर में ही रहे जबकि हेमचंद्र ने स्वयं अपनी सेना का नेतृत्व किया। एक ओर हेमचंद्र की सेना में कुल कुलचिह्न लाख सैनिक 1500 सुरक्षा कवच धारी हाथी योद्धा व धनुर्धर थे तो वहीं दूसरी ओर मुगल सेना में कुल 20 हजार अश्वारोही सैनिक ही थे। अकबर की सैन्य टुकड़ी की कूट नीतिक चालों ने एक बार तो हेमचंद्र के सैनिकों को तोपें छोड़ मैदान से भागने पर विवश कर दिया किंतु जब हेमचंद्र जब स्वयं हाथियों के साथ आगे बढ़े तो मुगल सेना का बायां पक्ष हिल उठा था। "हवाई" नामक एक विशाल हाथी पर सवार होकर सैन्य संचालन कर रहे हेमचंद्र ने ताबड़तोड़ तीरों की जो बौछार की उससे मुगल सेना भयभीत हो चुकी थी। इसी बीच वे भी शत्रुओं के तीरों से घायल तो थे किंतु सहसा एक तीर उनकी आंखों को चीरता हुआ मस्तिष्क में घुस गया और वे मूर्छित होकर हौदे में गिर पड़े। हेमचंद्र के गिरने की सूचना मात्र से उनके सैनिक बुरी तरह भयभीत होकर युद्ध क्षेत्र से भाग खड़े हुए और अकबर को बैठे बिठाए निर्णायक सफलता प्राप्त हो गई। बाद में उनके मृत प्रायः शरीर को शाह कुली खान अनेक सैनिकों के साथ अकबर के समक्ष ले जाया गया जहाँ स्वयं बैरम खान ने अकबर के ही समक्ष उनके टुकड़े– टुकड़े कर सिर को काबुल में और धड़ को दिल्ली में बेरहमी से दरवाजों पर लटकाया गया। इतना ही नहीं दोबारा कोई विद्रोह न कर सके इसलिए अकबर ने हेमचंद्र के सैनिकों और शुभचिंतकों के हजारों कटे सिरों का बुर्ज बनाया गया, उनकी संपत्ति पर कब्जा कर उनके पिता राय पूरणदास के भी टुकड़े– टुकड़े कर डाले और उनका कुल नष्ट करने के लिए अलवर, रेवाड़ी, नारनौल, आनौड़ आदि क्षेत्रों में बसे हुए उनके सहयोगियों को चुन–चुनकर बंदी बनाया गया। अनेक इतिहास विदों, समाजसेवियों ने हेमचंद्र विक्रमादित्य की महान राष्ट्र भक्ति, कुशल सैन्य संचालन का गुणगान करते हुए लिखा है कि चाहे उन्होंने मात्र एक महीने ही राज किया हो किंतु जितना प्रभावशाली व्यक्तित्व उनका था वह भारतीय इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण अध्याय है। संयोगवश उनकी और उनके हाथी की आँख में तीर लग जाने से अकबर की लौट्री लग गई।

मध्यकालीन और आधुनिक इतिहासकारों ने हेमचंद्र विक्रमादित्य के प्रति न्याय नहीं किया तथा युद्धक्षेत्र की एक दुर्घटना ने उनकी विजय को पराजय में बदल दिया अन्यथा संभवतः युद्ध का परिणाम दिल्ली में मुगलिया सल्तनत स्थापित करने की बजाय संपूर्ण भारत में हिंदू साम्राज्य की आधारशिला के रूप में स्थापित होता। आओ! भारत के इस गौरवशाली वीर सपूत को उनकी जयंती 5 अक्टूबर पर श्रद्धा सुमन अर्पित कर याद करें।

पता **329** संत नगर, पूर्वी कैलाश, नई दिल्ली–**65** सपर्क– 9810949109

दिल्ली चलो ओ३म् दिल्ली चलो

# केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 36 वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में

आर्य नेता, शिक्षाविद् **डा. अशोक कुमार चौहान** के सानिध्य एवं
युवा वैदिक विद्वान डा. जयेन्द्र आचार्य के ब्रह्मत्व में

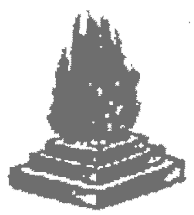

## 251 कुण्डीय विराट् यज्ञ

एवम्

## अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन

## दिनांक : 24, 25, 26 जनवरी 2015 (शनि, रवि व सोमवार)

स्थान: कमल पार्क, सफदरजंग एनक्लेव (निकट ग्रीन पार्क मैट्रो स्टेशन) नई दिल्ली-29

## विराट् शोभा यात्रा: शनिवार 24 जनवरी 2015, प्रात: 10:30 बजे

शुभारम्भ: कमल पार्क, सफदरजंग एनक्लेव, दिल्ली से प्रारम्भ होगी

### मुख्य आकर्षण

* नारी शक्ति सम्मेलन
* वेद सम्मेलन
* शिक्षा-संस्कृति निर्माण सम्मेलन
* भव्य संगीत संध्या
* आर्य युवा सम्मेलन
* राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

प्रात: से रात्रि निरन्तर तीनों दिन ऋषि लंगर की सुन्दर व्यवस्था

1. दिल्ली के बाहर से आने वाले आर्य बन्धु अपने पधारने की संख्या के बारे में 31 दिसम्बर 2014 तक सूचित करने की कृपा करें जिससे भोजन व आवास आदि का उचित प्रबन्ध किया जा सके।
2. कृपया यजमान बनने के इच्छुक आर्य बन्धु व आर्य समाजें अपना यज्ञकुण्ड 31 दिसम्बर 2014 तक फोन न: श्री प्रकाश वीर-9811757437, श्री ओम बीर-9868803585, श्री सत्यपाल-9899200447, श्री राणा जी-9868089983 पर आरक्षित करवा लें।

**हज़ारा की सख्या म पहुचकर आय समाज की विराट् सगठन शक्ति का परिचय दें**

### अपील

इस रचनात्मक विशाल कार्यक्रम में आपका तन, मन, धन से सहयोग अपेक्षित है
कृपया दानराशी क्रास चैक/ड्राफ्ट द्वारा ''केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली''
के नाम से कार्यालय के पते पर भिजवायें। ऋषि-लंगर के लिए आटा, दाल, चावल,
चीनी, शुद्ध घी, रिफाईन्ड, सब्जी आदि खाद्य सामग्री देकर पुण्य के भागी बनें

निवेदक

| आनन्द चौहान | डॉ. अनिल आर्य | महेन्द्र भाई | धर्मपाल आर्य | रविदेव गुप्ता | चतरसिंह नागर |
|---|---|---|---|---|---|
| दर्शन अग्निहोत्री | राष्ट्रीय अध्यक्ष | राष्ट्रीय महामन्त्री | कोषाध्यक्ष | स्वागताध्यक्ष | स्वागत मंत्री |
| प्रभात शेखर | 9810117464 | 9013137070 | 9871581398 | 9818006185 | 9211501545 |

यशोवीर आर्य, रामकुमार सिंह, कृष्णचन्द पाहुजा, रामकृष्ण शास्त्री
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

दुर्गेश आर्य, देवेन्द्र भगत, राकेश भटनागर, सुभाष बब्बर
राष्ट्रीय मंत्री

आनन्दप्रकाश आर्य, सत्यभूषण आर्य, मनोहरलाल चावलाप्रवीण आर्य, सुरेश आर्य, वीरेन्द्र योगाचार्य, सुशील आर्य, संतोष शास्त्री
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

राष्ट्रीय मत्री

कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-110007, मो. 9868661680
**E-mail:** aryayouthn@gmail.com **Website:** www.aryayuvakparishad.com
**Group:** aryayouthgroup@yahoogroups.com • join-http:// www.facebook.com/group/aryayouth

# दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल ने मनाया महर्षि दयानन्द बलिदान दिवस

रविवार, 26 अक्तुबर 2014, दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्वावधान में 131 वां महर्षि दयानन्द बलिदान दिवस आर्य समाज, जंगपुरा विस्तार, नई दिल्ली में सोल्लास मनाया गया। मण्डल के प्रधान श्री रविदेव गुप्ता को सम्मानित करते डा. महेश विद्यालंकार, डा.अनिल आर्य, मण्डल महामन्त्री श्री चतरसिंह नागर। द्वितीय चित्र में आर्य समाज मोती बाग, दिल्ली के प्रधान श्री महावीरसिंह आर्य व उपप्रधान श्री ओमवीरसिंह को सम्मानित करते डा.अनिल आर्य,श्री रविदेव गुप्ता आदि।

# मेरठ में डा. अनिल आर्य का अभिनन्दन व मोलडबन्द में ऋषि बलिदान दिवस सम्पन्न

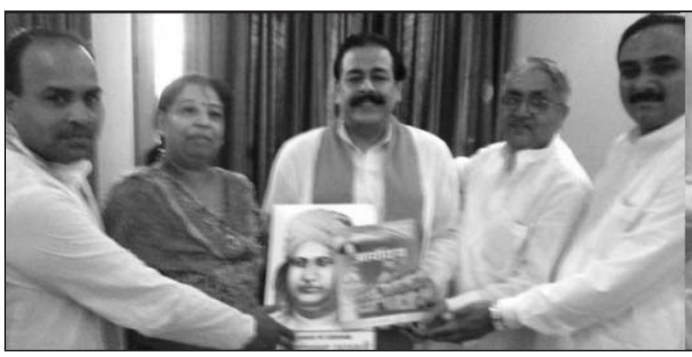

मंगलवार, 28 अक्तुबर 2014, आर्य समाज थापर नगर, मेरठ में डा. अनिल आर्य को महर्षि दयानन्द जी का चित्र व ''आर्योदय'' स्मारिका भेंट करते श्री अशोक सुधाकर व श्रीमती प्रीति सेठी। साथ में आचार्य गवेन्द्र शास्त्री व श्री रामकुमार सिंह। मंत्री श्री राजेश सेठी भी उपस्थित थे। द्वितीय चित्र–रविवार, 26 अक्तुबर 2014, आर्य समाज, मोलडबन्द विस्तार, नई दिल्ली में आयोजित महर्षि दयानन्द बलिदान दिवस पर समाज के प्रधान श्री श्यामसिंह यादव, मन्त्री श्री गजेन्द्र चौहान, पं.तुलसीराम आर्य को सम्मानित करते डा. अनिल आर्य व राष्ट्रीय मन्त्री श्री सुशील आर्य आदि।

# बहरोड़ आर्य समाज का दो दिवसीय वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न

रविवार, 19 अक्तुबर 2014, आर्य समाज, खातनखेड़ा, बहरोड़, राजस्थान का वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न हुआ। परिषद् के राष्ट्रीय महामन्त्री श्री महेन्द्र भाई ने यज्ञ करवाया। डा. वीरपाल विद्यालंकार, आचार्य विश्वपाल, पं. नरदेव आर्य, पं.योगेशदत आर्य, मन्जु शास्त्री, नीलम राठी, हरिओम शास्त्री, धर्मवीर आर्य, राजेन्द्र आर्य, मा.सत्यपाल शास्त्री, बहिन कलावती, रामानन्द आर्य, विनोद वकील आदि ने अपने विचार रखे। श्री रामकृष्ण शास्त्री ने संचालन किया।

## परिषद् अध्यक्ष डा.अनिल आर्य की आगामी बैठकें

1. पूर्वी दिल्ली–रविवार, 2 नवम्बर 2014, प्रातः 11 बजे, आर्य समाज, दिलशाद गार्डन, दिल्ली।
2. दक्षिण दिल्ली–रविवार, 2 नवम्बर 2014, सायं 4.00 बजे, आर्य समाज, सफदरजंग एनक्लेव, नई दिल्ली।
3. पश्चिमी दिल्ली–शनिवार, 8 नवम्बर 2014, प्रातः 11 बजे, आर्य समाज, रमेश नगर, दिल्ली।
4. उतर पश्चिमी–शनिवार, 8 नवम्बर 2014, सांय 5.00 बजे, आर्य समाज, प्रशान्त विहार, दिल्ली।
5. उतरी दिल्ली–रविवार, 9 नवम्बर 2014, सायं 5.00 बजे, आर्य समाज, राणा प्रताप बाग, दिल्ली।

सभी आर्य बन्धुओं से अनुरोध है कि स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती अमृत महोत्सव व अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन की तैयारी के लिये अपने निकट की बैठक में समय पर पहुँच कर सहयोग प्रदान करे।

–महेन्द्र भाई,राष्ट्रीय महामन्त्री

## 30 नवम्बर को राणा प्रताप बाग चलो

आर्य समाज, राणा प्रताप बाग, दिल्ली में रविवार, 30 नवम्बर 2014 को प्रातः 10 बजे से दोपहर 1.00 बजे तक श्री अंकित उपाध्याय के भजन होंगे। डा.अनिल आर्य मुख्य अतिथि होंगे व श्री ओम सपरा (प्रधान, उतरी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल) अध्यक्षता करेंगे। –रमेश डावर,संयोजक

## शोकः माता सुषमा सर्राफ का निधन

1. मेरठ के दानवीर परिवार की ''मां'' श्रीमती सुषमा सर्राफ का गत 26 अक्तुबर 2014 को निधन हो गया। परिषद् अध्यक्ष डा. अनिल आर्य, श्री रामकुमार सिंह, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री,श्री हीराप्रसाद शास्त्री आदि इस दु:ख में सम्मिलित हुए।
2. श्री सी.एल.मोहन (प्रधाान,आर्य समाज,मयूर विहार,फेज-2,दिल्ली) का गत् 27 अक्तुबर 2014 को निधन हो गया। श्रद्धाजंलि सभा में डा. अनिल आर्य, श्री महेन्द्र भाई, श्री ओमप्रकाश पाण्डेय, डा.नरेन्द्र वेदालंकार, आचार्य सुरेन्द्र जी,श्री भूदेव शास्त्री, डा.डी.के.गर्ग आदि सम्मिलित हुए।

**केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।**

सम्पादकः **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970